17 सितम्बर 2016, कुल पृष्ठ : 16, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30से 7.00बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 6 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2016 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

(1) औरंगाबाद (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रातः विभिन्न विषयों पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री द्वारा प्रातः 'भगवान महावीर की 11 शिक्षायें' विषय पर प्रवचन, दोपहर में सर्वार्थसिद्धि पर कक्षा एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रातः तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान पण्डित रजतजी शास्त्री कोटा द्वारा कराया गया, साथ ही बच्चों की पाठशाला भी ली गई। विधान के मध्य पण्डित अच्युतकांतजी द्वारा अर्थ भी समझाया गया।

(2) जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रातः दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ द्वारा समयसार के बंध अधिकार पर प्रवचन, दोपहर में ब्र.यशपालजी जैन, श्रीमती पूजा भारिल्ल व श्रीमती ज्योति सेठी द्वारा नाटक समयसार के पुण्य-पाप अधिकार पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वीतराग विज्ञान महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सुगन्ध दशमी के दिन अ.भा. जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर, टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान महिला मंडल बापूनगर द्वारा **'राग से वैराग्य की ओर'** विषय पर आकर्षक सजीव झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2000-2500 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की। विधि-विधान के कार्य पण्डित प्रियमजी शास्त्री एवं पण्डित सौरभजी शास्त्री ने विद्यार्थियों के सहयोग से संपन्न कराये।

(3) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रातः दशलक्षण मंडल विधान के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रातः समयसार पर एवं पण्डित जयकुमारजी कोटा द्वारा प्रातः योगसार व सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

(4) दिल्ली : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा प्रातः पंचास्तिकाय विधान के अतिरिक्त समयसार कलश पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(5) राजकोट (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर सीमंधर जिनालय में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रातः सत् विषय पर एवं रात्रि में मतिज्ञान विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातः दशलक्षण विधान, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

(6) कारंजा (राज.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर सैनगढ मंदिर में प्रातः तत्त्वार्थसूत्र विधान के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार पर एवं दोपहर में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल महावीर ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में विद्यार्थियों को संबोधनात्मक व्याख्यान हुआ। इसके अतिरिक्त कु. प्रज्ञा जैन द्वारा विभिन्न विषयों पर बच्चों की कक्षा एवं श्राविकाश्रम में बालिकाओं की कक्षा हुई।

(7) ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

चलो शिखरजी... अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 40वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सोमवार, दिनांक 10 अक्टूबर 2016 चलो शिखरजी...

श्री टोडरमल स्मारक भवन, स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

नर्तकी के तीर का निशाना सही जगह लगा, वह अपने लक्ष्य–बेध में सफल हुई, अत: वह प्रसन्न हो गई।

श्रीकांत ने अपनी आँखों पर अपने ही हाथों से पट्टी बाँध ली थी। पट्टी बांधे–बांधे ही शादी हो गई, दुल्हन घर आई, एक माह बाद पीहर जाकर फिर वापस घर आ गई, पर अभी भी श्रीकांत की आँख से पट्टी नहीं उतरी। पत्नी को चिंता हुई, आखिर बात क्या है ? कुछ दाल में काला नजर आता है, वह भी कम बुद्धिमान नहीं थी, सुन्दरी तो थी ही, चतुर भी बहुत थी।

उसने एक दिन पतिदेव से कहा –'स्वामिन् ! जब आँख पर पट्टी ही बंधी है तो आप दुकान पर क्यों जाते हैं, घर पर ही आराम कीजिये ?'

'नहीं–नहीं, दुकान जाना तो जरूरी है, आजकल एक तो वैसे ही घाटा ही घाटा हो रहा है और फिर घर बैठ गये तो...' भोलेपन से श्रीकांत ने कहा।

श्रीकांत की पत्नी ने सोचा –'इस रहस्य का पता तो लगाना ही है, अत: क्यों न अपनी दासी को यथार्थ स्थिति का पता लगाने के लिये गुप्तचर के रूप में श्रीकांत के पीछे लगा दिया जाये ?'

दासी भी चतुर–चालाक थी। उसने शीघ्र ही सब यथार्थ स्थिति का पता लगा लिया।

श्रीकांत जितना स्नेह नर्तकी से करता था, अपनी पत्नी से भी उससे अधिक प्रेम करने लगा था; क्योंकि उसने भी अपने सद्व्यवहार से उसका मन मोह लिया था। उसका मुँह न देखना तो उसकी मजबूरी थी।

नर्तकी की भाँति एक दिन उसकी पत्नी ने भी श्रीकांत के घर आते ही अपने हावभाव से उदासी प्रकट की।

श्रीकांत ने वही संवाद जो नर्तकी को उदास देखकर बोला था, पत्नी के सामने दुहराया –'जिसने आँख दिखाई हो, उसकी आँख फोड़ दूंगा, जिसने अँगुली दिखाई हो, उसकी अँगुली तोड़ दूंगा।'

तब पत्नी ने भी वैसे ही लहजे में कहा –'स्वामिन् ! ऐसी तो कोई बात नहीं है। हाँ, एक ज्योतिषी आया था।'

'क्या कहता था वह' – घबड़ाकर श्रीकांत बोला।

'और तो कुछ खास नहीं कहा, पर इतना अवश्य कहा कि जब तक तेरा पति तेरा मुँह नहीं देखेगा, तब तक उसके व्यापार में घाटा ही घाटा होता रहेगा। बस यही एक मेरी उदासी का कारण है।'

श्रीकांत बोला –'ये ज्योतिषी भी कमाल करते हैं।'

इसमें कमाल की क्या बात है ? जैसा उनके निमित्त ज्ञान में आया, बता दिया'– पत्नी ने कहा।

'पर सबका मत अलग–अलग क्यों ? एक कहता है कि पत्नी का मुँह देखेगा तो अंधा हो जायेगा, दूसरा कहता है कि नहीं देखेगा तो दिवाला निकल जायेगा, अब तू ही बता क्या करूँ ?

'एक उपाय है'– पत्नी ने गंभीरता से कहा।

'वह क्या ?'– श्रीकांत ने जिज्ञासा प्रगट की।

'खास तो कुछ नहीं, बस आप मुझे एक आँख से देख लो, दिवाला तो नहीं निकलेगा कम से कम। दिखने को तो एक आँख से भी उतना ही दिखता है जितना दोनों आँखों से, बल्कि निशाना लगाने में भी आसानी रहेगी' – हंसी रोकते हुये पत्नी बोली।

''क्या बात करती है, काना नहीं हो जाऊँगा ?'

'सोच लो दिवाला नहीं निकलने देना हो, तो इतना तो करना ही पड़ेगा। ऐसे आँख पर पट्टी कब तक बाँधे रहोगे ? और हाँ, यह तो विज्ञान का युग है न ! अत: अब तो आँखें पुनर्स्थापित करने की सुविधा भी उपलब्ध है।' – पत्नी ने कहा।

'हाँ ! यह ठीक है', कहकर श्रीकांत ने डरते–डरते एक आँख खोली तो चाँदसा मुखड़ा देखता ही रह गया। उसने आँख फूटने की आशंका से आँख को बार–बार मिलामिलाकर देखा, पर हुआ यह कि चमड़े की आँख फूटने की बजाय हृदय की आँखें, विवेक की आँखें खुल गई और पत्नी की चतुराई से नर्तकी के तिरियाचरित्र का भेद जानकर श्रीकांत बहुत प्रसन्न हुआ।

विज्ञान ने सेठ सिद्धोमल को यह कहानी सुनाते हुये कहा – ''जिस तरह सेठ धनदत्त को पण्डितजी के इस प्रवचन से दुहरा लाभ मिला था। सिद्धांत समझ में आ जाने से आत्मा का स्वरूप तो समझ में आया ही, साथ ही दृष्टांत सुनकर उसने भी अपने पुत्र श्रीकांत की सगाई एक ऐसी सुन्दर कन्या से तय कर ली जो सर्वगुण सम्पन्न और सर्वांग सुन्दर थी। उस कन्या के सम्पर्क में आने पर उसके सब दुर्व्यसन और दुराचार की बुरी आदतें स्वत: छूट गई; क्योंकि अब उसे उस सुन्दरी के सिवाय और कुछ अच्छा लगता ही नहीं था। ठीक इसी तरह यदि तुम भी अपने पुत्र संजू की सगाई किसी सर्वांग सुन्दर कन्या से कर दो तो उसका ध्यान भी सब जगह से हटकर एक जगह टिक जायेगा।''

सेठ सिद्धोमल यह कहानी सुनते ही बांसों उछल पड़े, मानों उन्हें निधि मिल गई हो। बस फिर क्या था, उन्होंने भी संजू की शादी सर्वश्रेष्ठ रूप–गुण सम्पन्न कन्या से करने का निश्चय कर

लिया, ताकि वह भी तथाकथित दुराचार से मुक्त हो सके। उसके लिए उन्हें जो कुछ त्याग करना पड़े, वे करने को तैयार हो गये।

इधर विज्ञान ने संजू से सम्पर्क करके उसके पिताजी के विचारों में आये परिवर्तन की खुशखबरी सुनाकर उसे भी पुन: घर लौटने के लिए राजी कर लिया।

सेठ सिद्धोमल ने सोचा – ''ऐसा अखण्ड पुण्य तो विरलों के ही होता है, जिसके फल में सब प्रकार की अनुकूलतायें एक साथ मिलती हैं। हम जैसे अधिकांश लोगों का तो दांत–चनों जैसा खेल ही होता है। जब दांत होते हैं तब चबाने को चने तक नसीब नहीं होते और जब पुण्य योग से सब कुछ भोग सामग्री उपलब्ध हो जाती है, तब तक आँतें इतनी कमजोर हो जाती हैं कि मूंग की दाल का पानी भी नहीं पचता।

ठीक यही स्थिति संजू की शादी के संबंध में घटित होती दिखाई देती है। अपने बराबरी का रिश्ता, भरपूर दहेज और सर्वांग सुन्दर कन्या – मन चाहे सभी संयोग मिलना तो संभव है नहीं; क्योंकि जिनके पास देने को भरपूर दहेज, सर्वांग सुन्दर व सर्वगुण सम्पन्न कन्या तथा सभी प्रकार की सम्पन्नता होगी, वह संजू जैसे आवारा लड़के को अपनी लड़की क्यों देगा ? भले संजू में कोई खास खराबी नहीं है, पर मैंने उससे संबंध विच्छेद की घोषणा करके अपने हाथ से ही अपने पैरों पर पत्थर जो पटक लिया है। इस परिस्थिति में यदि सुन्दर बहू चाहिए तो किसी निर्धन व्यक्ति की लड़की ही लेनी पड़ेगी। दहेज मिलना तो दूर, यह भी हो सकता है कि लड़की के माँ–बाप का आर्थिक सहयोग भी करना पड़े। अत: क्यों न अपनी ओर से ही दहेज न लेने की घोषणा करके उदार और आदर्शवादी होने का यशलाभ ही ले लिया जावे ? प्रतिष्ठा प्राप्त करने के इस स्वर्ण अवसर को यों ही खो देने में कोई समझदारी नहीं है।''

यह विचार करके सेठ सिद्धोमल ने समाज में अपनी मित्र मंडली और अपने सब मिलने–जुलने वालों से यह कहना प्रारम्भ कर दिया कि ''देखो भाई ! हम दहेज लेन–देन के तो कट्टर विरोधी हैं। आप भी देखो न ! इस दहेज दानव क आतंकवाद से आये दिन कैसी–कैसी दुखद दुर्घटनायें सुनने और पेपरों में पढने में आती है। बहू–बेटियों और उनके माता–पिता के साथ कैसे–कैसे अत्याचार होते हैं। अत: हम तो अपने बेटे संजू की शादी में शकुन के रूप में केवल एक रुपया और श्रीफल ही स्वीकार करेंगे। चाहे कन्यापक्ष वाला कितना ही बड़ा आदमी क्यों न मिले ? वह हमें कितना भी दहेज देने का प्रलोभन क्यों न दे ? पर हमें कुछ नहीं चाहिए।

हम तो इस लेन–देन की परम्परा को ही जड़मूल से उखाड़कर फेंक देना चाहते हैं, बिलकुल ही खत्म कर देना चाहते हैं। ताकि 'न रहे बांस न बजे बाँसुरी'। कोई कितना भी धन सम्पन्न क्यों न हो ? पर वह मुँहमांगा दहेज देकर भी वरपक्ष को संतुष्ट नहीं कर सकता। भला ईंधन अग्नि को कभी तृप्त कर सका है ? जिसतरह ईंधन पाकर अग्नि और अधिक भभक उठती है, इसी तरह आशा रूपी अग्नि धनादिक भोग सामग्री पाकर तृप्त होने के बजाय और अधिक भभकती है।

भाई ! हम तो इस पक्ष में भी नहीं हैं कि संजू का ससुराल किसी बड़े घर में ही हो। कन्यापक्ष की आर्थिक स्थिति साधारण भी हो तो हमें कोई परेशानी नहीं होगी धन की हमारे पास भी क्या कमी है, जो हम धन के लिए दूसरों का मुँह देखें। पराया धन का आना तो उस बरसाती नदी–नालों में आये गंदे, मटमैले पानी की तरह होता है, जो इधर से आया उधर बह गया, न वह कभी किसी के पीने के काम आता है और न स्थायी रूप से टिकता ही है। प्यास बुझानेवाला पीने का शुद्ध पानी तो उन कुओं से ही उपलब्ध होता है, जिनमें जमीन के अन्दर जलस्रोतों से निरन्तर निर्मल जल आता रहता है।

अरे भाई ! हम तो उन लोगों में से हैं कि यदि जरूरत हुई तो कन्यापक्ष का भी तन–मन–धन से – हर तरह से पूरा–पूरा सहयोग करने को तैयार हैं। पर कन्या सर्वगुण सम्पन्न और सर्वांग सुन्दर होनी चाहिए।''

इसप्रकार सेठ सिद्धोमल ने समाज में और अपनी मित्र–मंडली में लम्बे–लम्बे वक्तव्य देकर आदर्शवादी बनने की कोशिश तो बहुत ही, पर वे आदर्श व्यक्ति बन नहीं पाये। उनके इस प्रस्ताव को सुनकर एक क्रान्तिकारी समाज सुधारक से नहीं रहा गया। उसने सेठ सिद्धोमल को आड़े हाथों लेते हुए उन्हें अपने वचनबाण का निशाना बनाकर कहा – ''मैं सेठ सिद्धोमल और उन जैसे सहस्रों श्रीमन्तों से पूछना चाहता हूँ कि यदि आप लोग दहेज द्वारा मनचाहा धन लेकर वर–विक्रय नहीं करोगे तो तन–मन–धन से सहयोग देने के बहाने मुँहमांगा धन देकर कन्याओं का क्रय करोगे, पर यह वणिक वृत्ति तुम करोगे अवश्य। विक्रय नहीं तो क्रय, क्रय नहीं तो विक्रय। तुम क्रय–विक्रय का धंधा किए बिना नहीं रह सकते। बनिये जो ठहरे। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि क्रय–विक्रय कुछ भी न करो ?

(क्रमश:)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

स्वर्ण जयंती के मायने (11)

महाविद्यालय के सुपरिणाम

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय ने अब तक देश व समाज को जैनदर्शन के अधिकारी विद्वान, 750 से अधिक शास्त्री स्नातक प्रदान किये हैं, जो इसके द्वारा समाज को एक युगांतरकारी देन है। यहाँ यह उल्लेखनीय एवं गौरव का विषय है कि विभिन्न भागों में स्थित समाज के सभी महत्वपूर्ण संस्थानों का संचालन इसी महाविद्यालय के शास्त्री स्नातकों द्वारा हो रहा है। योग्य विद्वानों की सहज उपलब्धता से प्रेरित होकर देश में अनेक स्थानों पर अनेक ऐसे संस्थानों की स्थापना हुई जो आज वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। संस्थान चाहे कोई भी क्यों न हो व उसका संचालन चाहे कोई भी ट्रस्ट क्यों न कर रहा हो; परन्तु उनके माध्यम से अनेक विधाओं द्वारा तत्त्वप्रचार की गतिविधियों का संचालन इसी महाविद्यालय के स्नातक ही कर रहे हैं। इससे पूर्व योग्य, सक्षम व समर्पित विद्वानों के अभाव में यह संभव ही नहीं था। इसप्रकार हम पाते हैं कि यह पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा महाविद्यालय के माध्यम से तैयार हुए विद्वानों द्वारा पिछले चार दशकों में तत्त्वप्रचार का कार्य बहुगुणित होकर विश्वव्यापी हो गया है। आज आप विश्वभर में कहीं भी चले जाइये, जहाँ जैन लोगों का निवास होगा, वहाँ आपको जिनवाणी उपलब्ध होगी, तत्त्वचर्चा सुनने को मिलेगी।

समाज के अपने संस्थानों के अतिरिक्त अन्य अनेक संस्थानों जैसे कि विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूलों में भी इस महाविद्यालय के शास्त्री स्नातक विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर, लेक्चरर एवं आदर्श शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वे जहाँ भी हैं और जीविकोपार्जन के लिये जो कुछ भी कर रहे हैं; पर वे तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में अपना सक्रिय योगदान कर रहे हैं।

यह महाविद्यालय के प्रदेय का ही सुपरिणाम है कि इसने समाज की विद्वानों के प्रति धारणा में आमूल परिवर्तन कर डाला है। जहाँ एक ओर पहिले पण्डित अर्थात् एक दीन-हीन, हीन व्यक्तित्व का धारी, चन्दा उगाहने वाला व्यक्ति हुआ करता था, आज पण्डित एक अत्यंत आदरणीय विशेषण बन गया है। आज समाज के अनेक प्रभावशाली लोग व श्रीमंत अपने आपको पण्डित कहलवाने में गौरव का अनुभव करते हैं।

एक प्रचलित उक्ति है कि लक्ष्मी और सरस्वती में सनातन बैर है और दोनों एक स्थान पर साथ-साथ नहीं रहते; परन्तु यह पूज्य गुरुदेवश्री का ही पुण्यप्रताप है कि अनेक श्रीमंत लोग विद्वान व पण्डित बने और अब श्रीमंत भी बन रहे हैं।

एक समय ऐसा था कि प्राचीन महाविद्यालय बंद हो रहे थे, उन्हें विद्यार्थी मिलने बंद हो गये थे। आज नये-नये विद्यालय खुल रहे हैं और उनमें प्रवेश लेने के लिये उत्सुक, प्रतिबद्ध विद्यार्थी कतारबद्ध खड़े हैं। विद्यालयों में पहले ऐसे विद्यार्थी प्रवेश लेते थे, जिन्हें अन्य कहीं प्रवेश नहीं मिलता था। आज 95% अंक प्राप्त विद्यार्थी भी यहाँ प्रवेश लेते हैं।

समाज में ऐसे विद्यालयों की प्रतिष्ठा बढने से समाज भी मुक्त हस्त से इन्हें आर्थिक सहयोग प्रदान करने में आगे आया है, इसी का सुपरिणाम है कि जहाँ एक ओर प्रारम्भ में मात्र 20 विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष प्रवेश दिया जाता था, इस वर्ष 55 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया है।

ज्ञातव्य है कि उक्त महाविद्यालय में शिक्षण के दौरान 5 वर्ष तक बालकों को नि:शुल्क आवास व भोजन का प्रावधान है।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के कुशल निर्देशन में स्थापित एवं संचालित इस महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल व उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील हैं। महाविद्यालय के विद्यार्थियों को आदरणीय ब्रह्मचारी यशपालजी जैन का संरक्षण प्राप्त है और अध्यापन कार्य के लिये इन सबके अतिरिक्त श्रीमती कमला भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी शास्त्री, कु. प्रतीति पाटील व अन्य अनेक विद्वानों का सहयोग प्राप्त है।

आज इस बात में कोई संदेह नहीं है कि यह महाविद्यालय अब युगों-युगों तक समाज को जैनदर्शन के अधिकारी विद्वान प्रदान करता रहेगा और तीर्थंकरों द्वारा प्रणीत व गणधरों-आचार्यों द्वारा पल्लवित यह वीतरागी तत्त्वज्ञान जिसका मर्म आज पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने उद्घाटित किया है, सदा-सदा आत्मार्थियों के हितसाधन हेतु उपलब्ध रहेगा। **(क्रमश:)**

शोक समाचार

(1) कोटा (राज.) निवासी श्रीमती प्रकाशबाई जैन का दिनांक 30 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

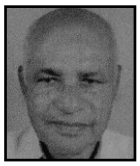

(2) नागपुर (महा.) निवासी श्री आदिनाथ नखाते का दिनांक 6 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप नागपुर मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष एवं गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान के अभ्यास व प्रचार-प्रसार में अत्यंत सक्रिय थे। ज्ञातव्य है कि आप श्रीमती अनिता जैन के पिताजी एवं अजित जैन बड़ौदा के ससुरजी थे।

(3) आरोन () निवासी श्री नन्दनलालजी जैन का दिनांक 26 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) कोलकाता निवासी स्व. श्री तखतराजजी मूथा के ज्येष्ठ पुत्र तथा श्री कांतिलालजी मूथा एवं श्री जयंतीलालजी मूथा के अग्रज सरल शांतस्वभावी **श्री सोहनराजजी मूथा** का दिनांक 3 अगस्त को 67 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में चतुर्थ अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं।

प्रश्न : मिथ्याज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर : प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वों को अयथार्थ (संशय-विपर्यय-अनध्यवसायरूप) जानने का नाम मिथ्याज्ञान है।

प्रश्न : मिथ्यादृष्टि का सर्वज्ञान झूठा और सम्यग्दृष्टि का सर्वज्ञान सच्चा ? कथन की समीक्षा कीजिये।

उत्तर : यदि मात्र जानने ही का प्रयोजन हो तो वहाँ सच-झूठ जानने की अपेक्षा सम्यक्-मिथ्या ज्ञान नाम दिया जाता है; परन्तु यहाँ संसार-मोक्ष के कारणभूत वस्तुओं के सच-झूठ जानने का निर्धारण करना है; अत: यहाँ तो प्रयोजनभूत जीवादिक तत्त्वों को यथार्थ-अयथार्थ जानने की अपेक्षा सम्यक्-मिथ्या ज्ञान कहे हैं। सम्यग्दृष्टि प्रयोजनभूत तत्त्वों को यथार्थ जानता है और मिथ्यादृष्टि प्रयोजनभूत तत्त्वों को यथार्थ नहीं जानता है। इसी अभिप्राय से सिद्धान्त में मिथ्यादृष्टि के सर्व जानने को मिथ्याज्ञान और सम्यग्दृष्टि के सर्वजानने को सम्यग्ज्ञान कहा।

प्रश्न : इस मिथ्याज्ञान का कारण क्या ?

उत्तर : जिसप्रकार विष के संबंध से भोजन भी विषरूप हो जाता है, उसी प्रकार मोह के उदय से जो मिथ्यात्वभाव होता है, वह इस मिथ्याज्ञान का कारण है।

प्रश्न : ज्ञानावरण कर्म को मिथ्याज्ञान का कारण क्यों नहीं कहा ?

उत्तर : ज्ञानावरण कर्म के उदय में ज्ञान के अभावरूप अज्ञान भाव होता है तथा उसके क्षयोपशम से किंचित् मतिज्ञानादि होते हैं जो स्वभाव का अंश है।

यह अवस्था सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि दोनों में पायी जाती है; अत: दोनों को मिथ्याज्ञान-सम्यग्ज्ञान का सद्भाव ठहरेगा, जो सिद्धांत विरुद्ध है। अत: मिथ्याज्ञान हेतु ज्ञानावरण कर्म को कारण नहीं कहा। ज्ञानावरण कर्म के उदय से होने वाला अज्ञान संसार-मोक्ष के लिये कारण नहीं है। मोह के उदय से हुए भाव को ही कारण कहा।

प्रश्न : ज्ञानपूर्वक श्रद्धान होता है; अत: पहले ज्ञान बाद में दर्शन कहो?

उत्तर : है तो ऐसा ही; जाने बिना श्रद्धान नहीं होता; परन्तु मिथ्या और सम्यक् - ज्ञान के ऐसी संज्ञा मिथ्यादर्शन और सम्यग्दर्शन के निमित्त होती है। इसलिये जहाँ सामान्य ज्ञान-श्रद्धान का निरूपण हो वहाँ ज्ञान कारणभूत है और उसे प्रथम कहना और श्रद्धान कार्यभूत है उसे बाद में कहना तथा जहाँ मिथ्या-सम्यक् ज्ञान-श्रद्धान का निरूपण हो वहाँ श्रद्धान कारणभूत है, उसे प्रथम कहना और ज्ञान कार्यभूत है उसे बाद में कहना।

प्रश्न : ज्ञान-श्रद्धान तो युगपत् होते हैं, उनमें कारण-कार्यपना कैसे कहा जाएगा ?

उत्तर : वह हो तो वह हो, इस अपेक्षा कारण-कार्यपना होता है। दीपक की भांति जैसे दीपक और प्रकाश युगपत् होने पर भी दीपक कारण है और प्रकाश कार्य उसी प्रकार मिथ्या-सम्यक् दर्शन-ज्ञान के कारण-कार्यपना समझना।

प्रश्न : मिथ्यादर्शन के संयोग से ही ज्ञान मिथ्या नाम पाता है तो मिथ्यादर्शन को ही संसार का कारण कहो मिथ्याज्ञान को अलग संसार का कारण किसलिये कहा ?

उत्तर : ज्ञान की अपेक्षा तो मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि के क्षयोपशम से हुए ज्ञान में कुछ भेद नहीं है, इसलिये ज्ञान में कुछ दोष नहीं है; परन्तु क्षयोपशम ज्ञान जहाँ लगता है, एक ज्ञेय में लगता है और मिथ्यादर्शन के निमित्त से वह क्षयोपशम ज्ञान अन्य ज्ञेयों में तो लगता है; प्रयोजनभूत जीवादि तत्त्वों के ज्ञान करने में नहीं लगता सो यह ज्ञान का दोष है, इसलिये मिथ्याज्ञान को पृथक् संसार का कारण कहा और जीवादि तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान नहीं होता यह श्रद्धान में दोष हुआ। इसप्रकार लक्षणभेद से दोनों को भिन्न कारण कहा।

प्रश्न : मिथ्याचारित्र का स्वरूप बताइये ?

उत्तर : चारित्र मोह के उदय से जो कषायभाव होता है, उसका नाम मिथ्याचारित्र है। यहाँ अपने स्वरूपरूप प्रवृत्ति नहीं है, झूठी पर स्वभाव रूप प्रवृत्ति करना चाहता है सो यह बनती नहीं इसलिये इसका नाम मिथ्याचारित्र है।

प्रश्न : इष्ट-अनिष्ट की भी कल्पना को मिथ्या क्यों कहा ?

उत्तर : जो अपने को सुखदायक उपकारी हो उसे इष्ट तथा जो अपने को दु:खदायक अपकारी हो उसे अनिष्ट कहते हैं। लोक में सर्व पदार्थ अपने स्वभाव के कर्त्ता हैं। कोई किसी को सुख-दु:खदायक नहीं है। उनमें इष्ट-अनिष्टपना तो है नहीं। यदि पदार्थों में इष्ट-अनिष्टपना होता जो पदार्थ इष्ट होता वह सभी को इष्ट और जो पदार्थ अनिष्ट होता वह सभी को अनिष्ट होता; परन्तु ऐसा है नहीं। यह जीव कल्पना द्वारा अपने कषाय परिणामों में उन्हें इष्ट-अनिष्ट मानता है सो यह कल्पना झूठी है, इसलिये इष्ट-अनिष्ट की कल्पना को मिथ्या कहा।

प्रश्न : बाह्य वस्तुओं के संयोग कर्म निमित्त से बनते हैं; अत: कर्मों में तो राग-द्वेष करना ?

उत्तर : कर्म तो जड़ हैं, उनको कुछ सुख-दु:ख देने की इच्छा नहीं है तथा वे स्वयमेव तो कर्मरूप परिणमित होते नहीं हैं। जीव के भावों के निमित्त कर्मरूप होते हैं, जैसे कोई अपने हाथ में पत्थर लेकर सिर फोड़े तो पत्थर का क्या दोष ? उसी प्रकार जीव अपने रागादि भावों से पुद्गल को कर्मरूप परिणमित कर अपना बुरा करे तो कर्म का क्या दोष ? अत: कर्मोदय में भी राग-द्वेष करना मिथ्या है।

प्रश्न : राग-द्वेष के विधान व विस्तार पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

उत्तर : प्रथम तो जीव को पर्याय में अहं बुद्धि है सो यह जीव अपने को

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

दृष्टि का विषय

30 आठवाँ प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

समयसार परमागम की छठवीं-सातवीं गाथा के आधार से इस विषय पर चर्चा चल रही है कि दृष्टि के विषय में पर्याय शामिल है या नहीं तथा पर्याय शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है ?

पूर्व में की गई समस्त चर्चा को स्पष्ट करनेवाला समयसार अनुशीलन का निम्न कथन दृष्टव्य है –

''इसप्रकार यह अत्यन्त स्पष्ट है कि प्रवाह की निरन्तरता को भी नित्यता कहते हैं, क्योंकि नित्यता और अनित्यता में काल की अपेक्षा मुख्य है।

अत: नित्य का अर्थ 'वस्तु की सदा उपस्थिति' मात्र इतना ही अभीष्ट नहीं है, अपितु उसमें प्रवाह की निरन्तरता भी सम्मिलित है। यह नित्यता ही काल की अखण्डता है, जो दृष्टि के विषयभूत द्रव्य का अभिन्न अंग है।[१]''

वस्तु, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावमय होती है।

१. द्रव्य की अपेक्षा से वस्तु के सामान्य और विशेष – ये दो भेद होते हैं। **२. क्षेत्र की अपेक्षा से** वस्तु के भेद और अभेद – ये दो भेद होते हैं। **३. काल की अपेक्षा से** वस्तु के नित्य और अनित्य – ये दो भेद होते हैं। **४. भाव की अपेक्षा से** वस्तु के एक और अनेक – ये दो भेद होते हैं।

इसप्रकार इन आठ से संयुक्त जो वस्तु होती है, उसे प्रमाण का द्रव्य कहा जाता है और यह प्रमाण का द्रव्य मूल वस्तु है।

उस मूलवस्तु में से **१. द्रव्य का सामान्य, २. क्षेत्र का अभेद, ३. काल का नित्य और ४. भाव का एक – ये सामान्य, अभेद, नित्य और एक – ये द्रव्यार्थिक नय के विषय हैं; इन चारों को द्रव्यार्थिकनय का विषय होने से 'द्रव्य' कहा जाता है।**

उस मूलवस्तु में, **१. द्रव्य का विशेष, २. क्षेत्र का भेद, ३. काल का अनित्य और ४. भाव का अनेक – ये विशेष, भेद, अनित्य और अनेक – पर्यायार्थिक नय के विषय हैं, इन चारों को पर्यायार्थिकनय का विषय होने से 'पर्याय' कहा जाता है।**

द्रव्यार्थिकनय के विषयभूत द्रव्य में पर्याय, शामिल नहीं है, जबकि प्रमाण के विषयभूत द्रव्य में पर्याय, शामिल है।

द्रव्यार्थिकनय के विषयभूत द्रव्य एवं पर्यायार्थिकनय के विषयभूत पर्याय – इन दोनों को एकसाथ प्रमाण, अपना विषय बनाता है।

द्रव्यार्थिकनय के विषय की संज्ञा **द्रव्य** है एवं पर्यायार्थिकनय के विषय की संज्ञा **पर्याय** है।

काल की अपेक्षा वस्तु के नित्य और अनित्य – ये दो पक्ष होते हैं।

जब हम वस्तु को नित्य कहते हैं तो उस नित्य का अर्थ हम यह समझते हैं कि 'जो हमेशा कायम रहे' उसका नाम नित्य है।

'कायम रहना' का अर्थ हम मात्र 'नहीं पलटना' ही ग्रहण करते हैं, संकुचित अर्थ में नित्य का यह अर्थ सही भी है, लेकिन व्यापक अर्थ में नित्य का अर्थ अलग ही है।

'अनादिकाल से लेकर अनंतकाल तक प्रत्येक द्रव्य प्रतिसमय पलटेगा, एक समय भी पलटे बिना रहेगा नहीं' – यह स्वरूप भी नित्य है; क्योंकि यदि यह स्वरूप अनित्य होता तो फिर द्रव्य कभी पलटता और कभी नहीं पलटता, जबकि ऐसा नहीं होता है। द्रव्य नित्य पलटता है।

जब हम 'नित्य पलटता है' – यह कहते हैं तो हमें पलटने के साथ नित्यता का बैर-विरोध लगता है, जबकि इसमें बैर-विरोध नहीं है।

जैसा वस्तु का स्वभाव, 'कभी नहीं पलटना है' वैसा ही वस्तु का स्वभाव, 'प्रतिसमय पलटना' भी है। वस्तु का द्रव्यस्वभाव, कभी नहीं पलटनेवाला है और वस्तु का पर्यायस्वभाव – प्रतिसमय पलटनेवाला है। ये दोनों ही वस्तु के नित्य स्वभाव हैं।

ऐसा नहीं है कि द्रव्यस्वभाव द्रव्य का स्वभाव है और पर्यायस्वभाव, पर्याय का। **ये दोनों ही वस्तु के नित्य स्वभाव हैं।**

अब यदि कोई यहाँ पूछे कि उसका पर्याय स्वभाव नाम क्यों रखा?

अरे भाई ! पलटनेवाला स्वभाव होने से उसका पर्यायस्वभाव नाम रखा। पर्यायस्वभाव वस्तु का स्वभाव होने से, द्रव्यस्वभाव ही है।

पर्याय के बारे में, पर्याय की तरफ से/अपेक्षा से कहा जाता है, इसलिए पर्यायस्वभाव कहा जाता है।

पर्यायस्वभाव का तात्पर्य पर्याय का स्वभाव नहीं है।

१. समयसार अनुशीलन, भाग १, पृष्ठ ७७

'वस्तु में प्रतिसमय परिवर्तन होगा' यह बतानेवाला द्रव्य का पर्यायस्वभाव है। यह पर्यायस्वभाव नित्य है, अनित्य नहीं।

जिसप्रकार द्रव्य का कभी भी नहीं पलटना स्वभाव है; उसीप्रकार द्रव्य का निरन्तर पलटना भी स्वभाव है। अब यदि कोई कहे कि 'कभी नहीं पलटना' और 'निरन्तर पलटना' ये दोनों एक साथ कैसे हो सकते हैं ? इस प्रश्न का समाधान करनेवाला, समयसार ग्रन्थाधिराज की ३०८ से ३११ की गाथा की टीका का निम्न कथन दृष्टव्य है –

''जीवो हि तावत्क्रमनियमितात्मपरिणामैरुत्पद्यमानो जीव एव नाजीवः। एवमजीवोऽपि क्रमनियमितात्म–परिणामैरुत्पद्यमानोऽजीव एव, न जीवः।

प्रथम तो जीव क्रमबद्ध ऐसे अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ जीव ही है, अजीव नहीं। इसीप्रकार अजीव भी क्रमबद्ध अपने परिणामों से उत्पन्न होता हुआ अजीव ही है, जीव नहीं।[१]''

इन पंक्तियों में 'पलटना' और 'नहीं पलटना', ये दोनों बातें एक साथ कही हैं। जीव प्रतिसमय पलट रहा है, अनादिकाल से पलट रहा है एवं अनंतकाल तक पलटेगा, फिर भी वह पलट कर कभी अजीव नहीं होगा।

'एक द्रव्य, कभी दूसरे द्रव्यरूप नहीं होता है' – इसका नाम है कभी नहीं पलटना एवं अपने में निरन्तर परिवर्तन होने का नाम पलटना है।

भगवान आत्मा में अनंत गुण हैं व असंख्य प्रदेश हैं और उन अनंत गुणों में से कभी भी एक गुण, कम नहीं होगा और असंख्य प्रदेशों में से कभी भी एक प्रदेश, कम नहीं होगा।

जिसप्रकार यह नित्यस्वभाव है; उसीप्रकार 'प्रत्येक गुण में प्रतिसमय परिणमन होगा' – यह भी नित्य स्वभाव ही है। **मात्र 'नहीं पलटना' ही नित्यस्वभाव नहीं है, अपितु 'प्रतिसमय पलटना' भी नित्यस्वभाव है।**

इसप्रकार नित्य में 'वस्तु की सदा उपस्थिति' मात्र इतना ही नहीं है, अपितु प्रवाह की निरन्तरता भी शामिल है। यह नित्यता ही काल की अखण्डता है, जो दृष्टि के विषयभूत द्रव्य का अभिन्न अंग है।

प्रवाह की निरन्तरता को नित्यता कहते हैं। जैसे – नदी मात्र बहुत पानी का नाम नहीं है, बहुत पानी का नाम दरिया, समुद्र, झील, तालाब, बाँध या कुँआ, कुछ भी हो सकता है; लेकिन नदी नहीं हो सकता।

न तो पानी के अभाव का नाम नदी है और न ही पानी के समुदाय का नाम नदी है। यदि नदी में से प्रवाह को निकाल दिया जाये तो वह नदी नहीं रहेगी; फिर वह तालाब, बाँध या समुद्र हो जायेगी, लेकिन नदी नहीं रहेगी।

गंगोत्री से निकल कर बंगाल की खाड़ी तक, गंगा निरन्तर प्रवाहमान नदी है; उसके बाद गंगा, नदी नहीं है, क्योंकि फिर तो वह सागर बन गई। इसप्रकार प्रवाह की निरन्तरता का नाम ही नित्यता है।

'द्रव्य नित्य है और पर्याय अनित्य है' – यह भाषा तो अधूरी है। पूरी भाषा तो यह है कि **'द्रव्यदृष्टि से द्रव्य (वस्तु) नित्य है और पर्याय दृष्टि से द्रव्य (वस्तु) अनित्य है।'**

नाटकों की जो भाषा होती है, वह अपूर्ण होती है; जबकि अदालत की भाषा, न्यायशास्त्र की भाषा पूर्ण होती है। नाटकों में किसी के द्वारा यह पूछने पर कि 'तुम आओगे ?' तो इसका उत्तर मात्र 'हाँ' दिया जा सकता है' अदालत में मात्र हाँ कहने पर काम नहीं चलेगा। यदि वहाँ यह पूछा जाता है कि तुम्हारा नाम विमलकुमार है ? तो उसे अदालत में न्यायाधीश के सामने पूरा वाक्य बोलना पड़ेगा कि हाँ ! मेरा नाम विमलकुमार है।

नाटक, साहित्य के अंतर्गत आते हैं; इसलिए साहित्य की भाषा में पर्याय अनित्य है, द्रव्य नित्य है – मात्र इतना ही कह दिया जाता है; लेकिन इस वाक्य का वास्तविक अर्थ यह है कि **द्रव्यार्थिक दृष्टि से द्रव्य नित्य है और पर्यायार्थिक दृष्टि से द्रव्य अनित्य है।**

इसप्रकार नित्यता का अर्थ 'वस्तु की सदा उपस्थिति' ही नहीं है, अपितु उसमें प्रवाह की निरन्तरता भी शामिल है; क्योंकि नित्यता और अनित्यता दोनों में काल की अपेक्षा है। नित्यता में भी काल की अपेक्षा है और अनित्यता में भी काल की अपेक्षा है। वस्तु नित्य भी काल की अपेक्षा से है और अनित्य भी काल की अपेक्षा से है। (क्रमशः)

१. समयसार, ३०८ से ३११वीं टीका, पृष्ठ ४९४

हार्दिक धन्यवाद !

जयकुमार–डॉ.विजयलक्ष्मी, डॉ.रैना जैन कोटा, विद्या–ऋषभ खमेसरा टोरंटो (कनाडा) परिवार की ओर से 1 लाख रुपये की राशि शिविर परम संरक्षक हेतु प्राप्त हुये; एतदर्थ हार्दिक धन्यवाद !

यदि हमें भी आत्मा का उत्थान करना है तो सहज व सरल वृत्ति का बनना होगा। **– पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, पृष्ठ 14**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रात: नित्यनियम पूजन के अतिरिक्त पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही आपकी सुपुत्री विदुषी प्रतीति पाटील द्वारा दोपहर में महावीराष्टक स्तोत्र पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। प्रवचन के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।– **ऋषभ टडैया**

(8) मुम्बई–दादर : यहाँ पर्व के अवसर पर शिवाजी मंदिर समाज के विशेष आग्रह पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का समागम प्राप्त हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन और तदुपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार पर तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र–भक्ति एवं पण्डित आदित्यजी शास्त्री के सोलहकारण भावनाओं पर संक्षिप्त प्रवचन हुए। समाज के विशेष आग्रह पर रात्रि में प्रवचनोपरान्त डॉ.संजीवजी द्वारा तीन लोक विषय पर विशेष कक्षा का आयोजन हुआ। एक दिन दोपहर में युवाओं के लिये विशेष प्रवचन तथा दो दिन दोपहर में जैन सेन्टर सोमैया कॉलेज घाटकोपर में भी कालचक्र विषय पर गोधाजी के विशेष व्याख्यान हुए। ज्ञातव्य है कि दशलक्षण के पूर्व विले पार्ले में सप्तभंगी विषय पर भी मार्मिक व्याख्यान हुआ।

(9) सागर (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री महावीर जिनालय में तत्त्वार्थसूत्र विधान के अतिरिक्त डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र पर एवं रात्रि में अपूर्व अवसर पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

(10) बैंगलोर (कर्नाटक) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण विधान के अतिरिक्त पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा प्रात: समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(11) सम्मेदशिखरजी (झारखंड) : यहाँ पर्व के अवसर पर कुन्दकुन्द कहान नगर में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा तीनों समय क्रमश: समयसार, तत्त्वार्थसूत्र एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही आपकी सुपुत्री कु.श्रुति जैन द्वारा दोपहर को तत्त्वार्थसूत्र का पाठ एवं रात्रि में प्रश्नमंच का आयोजन हुआ। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान पण्डित रमेशजी इन्दौर द्वारा श्री राजकुमारजी जैन के सहयोग से करवाया गया।

(12) जयपुर–आदर्श नगर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: डॉ. श्रीयांसजी सिंघई द्वारा दशलक्षण धर्म पर एवं सायंकाल पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। धूपदशमी के दिन प्रोजेक्टर के माध्यम से अभक्ष्य पदार्थों की जानकारी उपस्थित जनसमुदाय को दी गई।

(13) जयपुर–सी स्कीम (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर अशोकनगर दिगम्बर जैन समाज के तत्त्वावधान में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा रात्रि में प्रारंभिक 5 दिन आदिनाथ दिग.जैन चैत्यालय में एवं शेष दिन गोखले मार्ग स्थित पार्श्वनाथ चैत्यालय में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सी–स्कीम स्थित सेठी चैत्यालय में पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री द्वारा सायंकाल बारहभावना एवं दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(14) जयपुर–जगदीश विहार (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित सौरभजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. अरुणकुमारजी बण्ड द्वारा सायंकाल दशलक्षण धर्म पर ऑनलाइन प्रवचन हुये, जिसका आयोजन मोना द्वारा किया गया।

(पृष्ठ 5 का शेष...)

और शरीर को एक जानकर प्रवर्तता है, फिर शरीर के अनुकूल–प्रतिकूल कारणों में राग–द्वेष करता है, फिर कारणों के कारणों में भी राग–द्वेष करता है। इसप्रकार राग–द्वेष की परम्परा प्रवर्तती है। अनेक बार कषायवश जो शरीर की अवस्था में कारण नहीं है, उन पदार्थों में भी राग–द्वेष करता है।

प्रश्न : मोह की महिमा पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।

उत्तर : ये मिथ्यादर्शनादिक भाव अनादि से जीव के पाये जाते हैं। इनके कारण बिना सिखाये ही मोह के उदय से ऐसा ही परिणमन होता है। मनुष्यादिक को सत्यविचार का कारण मिलने पर भी सम्यक् परिणमन नहीं होता, श्रीगुरु के उपदेश का निमित्त बने, वे बारम्बार समझायें तो भी यह कुछ विचार नहीं करता तथा स्वयं को प्रत्यक्ष भासित हो तो भी यह नहीं मानता अन्यथा ही मानता है। जैसे शरीर और आत्मा भिन्न–भिन्न भासित होने पर भी एक मानता है। मरण अवश्य होगा – ऐसा जानने पर भी कुछ कर्तव्य नहीं करता, परलोक में जाना प्रत्यक्ष जानने पर भी उसके अर्थ कुछ प्रयत्न नहीं करता, विषय–कषाय परिणति तथा हिंसादि द्वारा स्वयं दु:खी होता है तो भी उन्हीं में प्रवर्तता है सो यह मोह की महिमा है।

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह–सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127